Research Paper | HISTORY | E-ISSN : 2455-295X | Volume : 2 | Issue : 1 | January 2016

अजंता के भित्ति चित्रों में भाव प्रवणता

डॉ. दीपक कुमार भट्ट[1]

[1] सहायक प्रोफेसर (पेंटिंग विभाग) सीवीएम कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, सीवीएम विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्या नगर, आनंद, गुजरात.

ABSTRACT

भारत की चित्र संपदा पर्याप्त समृद्ध रही है। भारतीय चित्रो की भावभूमि आध्यात्मिक है। पुरातन समस्त चित्र शैलियों में सबसे प्रमुख, व्यापक एवं प्रभाव पूर्व अजंता शैली है। अजंता की गुफाओं में चित्रों में कलाकारों का रेखाओं पर असाधारण प्रभुत्व था वे रेखाओं के जादूगर थे। इसीलिये भारतीय चित्रकला रेखा प्रधान है। अजंता के कलाकारों ने गुफाओं कि भित्तियों पर सजीव प्रकृति, जीव-जन्तुओ, बुद्ध की जन्म जन्मांतर की कथाओ का अंकन किया है चित्रकारों ने भावाभिव्यंजक रेखा मात्र से मुद्राओं में दुःख, चिंतन, शोक, दया, करुणा, विषाद, वात्सल्य, स्नेह, जैसे भावों को चित्रित किया है।

Key words: अलौकिक, अजंता, अलंकरण, भाव, रेखा, बोधिसत्व, रेखांकन, रंग, करुणा, वेदना, विषाद, शांति, हाथी, अध्यात्म, पद्मपाणि

मूल आलेख –

अजंता के कलाकारों ने मानव के भिन्न-भिन्न रूपों, चरित्रों तथा भावों को रेखा के द्वारा ही सफलता से अभिव्यक्त किया है। अजंता शैली में अधिकांश रेखाएं अटूट, प्रवाहमय और भाव -प्रणव है। चित्रों का गहराई से अध्ययन करें तो मुद्राओं, व भावभंगिमाओ की अद्भुत छटा देखने को मिलती है। कलाकारों ने अपने मन की समस्त भावनाये सजीव ढंग से यो ढाल दी है कि ये मूक चित्र भी बोलते हुए प्रतीत होते हैं। भावाभिव्यक्ति में अपूर्व शक्ति होने से समस्त पात्र दिव्य रुप में प्रतिबिम्बित हुए हैं।

गुफा संख्या एक में अजंता के चित्रों में व्यक्त अभिव्यक्ति, भव्य अलंकरण, सभी कुछ प्रधान शैली में चित्रित है। पहली गुफा की छत में सांडों की लड़ाई में गति और अभिव्यक्ति असाधारण है। इसी गुफा में पद्मपाणि अवलोकितेश्वर का चित्र है, श्री बी जी गोखले के शब्दों में "इस चित्र समूह में सबसे लाक्षणिक चित्र दयामूर्ति बोधिसत्व पद्मपाणि का है। यह चित्र साधारण मानवाकृतियों से बड़े रुप में चित्रित है। अलौकिक बुद्धि एवं दया की मूर्ति महात्मा बुद्ध अपने दांहिने हाथ में कमल का फूल लिये है। मनुष्य से इनका शरीर अनुपातिक दृष्टि से बड़ा है। वह कुछ आगे की ओर झुककर नीचे की ओर देख रहे हैं, मानो विपदाग्रस्त मानवता पर अपनी दया दृष्टि डाल रहे है। गहरी व्यथा और करुणा की अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह आकृति कला का आदर्श है। इसी चित्र पर डॉ.आर.सी.मजूमदार ने लिखा है-"बाहर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि वे गतिशील है किंतु वे शान्ति प्राप्त कर चुके है, महान सत्य का साक्षात्कार कर लेने के कारण उनकी पलकें नमित है और अपनी गंभीरता में स्वयं को अन्तर्मुक्त कर चुके है।" यहीं 'प्रेम-मग्ना सुन्दरी' का उद्दीपन युक्त चित्र है, प्रेमी का हाथ सुंदरी के गले पर है जिससे स्नेह और आग्रह बह रहा है। नेत्रों का मदिरभाव स्पष्टतः चू रहा है।

गुफा संख्या सोलह में बना चित्र मरणोन्मुख राजकुमारी, करुणा की पराकाष्ठा का अद्भुत चित्रण है, जिसमें रानी की करुण दशा, परिवेश की विकलता एवं वेदना का अनुपम चित्रण किया गया है। ग्रिफिक्स महोदय का मत है कि - फ्लोरेंस का चित्रकार इससे अच्छा रेखांकन कर सकता था और वेनिस का कलाकार अच्छे रंग भर सकता था, किंतु दोनों में से कोई इससे अधिक सुंदर 'भाव' का प्रदर्शन नहीं कर सकता था। 'महाभिनिष्क्रमण' के दृश्य में निर्मोही बुद्ध का चित्रण अपूर्व कौशल एवं भावुकता के साथ किया गया है। सिस्टर निवेदिता के शब्दों में " यह चित्र संभवतः भगवान बुद्ध का सबसे बड़ा कल्पनात्मक प्रदर्शन है, जिसे संसार ने कभी देखा है, ऐसी अद्वितीय कल्पना कठिनता से दूसरी बार उत्पन्न हो सकती है।" इसी गुफा में दुसरा चित्र 'विरहणी राजकुमारी' का दया, करुणा एवं विकलता से ओतप्रोत है।

सत्रहवीं गुफा (जातक कथाएं) - इस गुफा में जातक कथाएं बहुत सुंदरता से अंकित की गई हैं। प्रत्येक जातक कथा में भावनाओं की महत्ता है। जैसे -महाकपि जातक,शिविजातक, महाहंस जातक, हस्तिजातक, छदंतजातक, मातृपोषक जातक।

शिवि जातक में एक बाज़ कबूतर का पीछा करते हुए राजा शिवि की गोदी में जा गिरा और उनसे अपने प्राणो की रक्षा की भीख मांगी,तो राजा ने बाज़ को अपने शरीर का मांस काट कर भूख मिटने की प्रार्थना की,अंत में तराजू में कबूतर के बराबर, अपने शरीर का मांस काट कर रख दिया उपरोक्त कथा में राजा शिवि के त्याग की भावना का भावोद्दीपक चित्रण है।

मातृपोषक जातक- श्वेत हाथी के रुप में बुद्ध को पकड़ कर राजा के पास लाया गया। हाथी ने मां के वियोग में अन्न जल त्याग दिया। जब राजा ने ये जाना तो हाथी को पुनः जंगल में छोड़ दिया। हाथी का अपनी अंधी मां से मिलन बहुत मार्मिक दृष्टि से अंकित किया है।

सर्वनाश नामक चित्र में चंद रेखाओ से व्यक्ति के चहरे के दुखी भाव,मानो सुब कुछ नाश हो गया हो का चित्रण हृदयस्पर्शी है।

राहुल समर्पण- में भिक्षुक बुद्ध जब यशोधरा के द्वार पर पहुंचते है तो यशोधरा अपने पुत्र को भिक्षा में दें देती है, इस चित्र में राहुल के मुख पर अबोधता के भाव, यशोधरा के नेत्रों में श्रद्धायुक्त आत्मत्याग का भाव तथा बुद्ध के मुख पर आध्यात्मिकता का भाव। चित्रकार ने इन तीनों के मनोभावों को दर्शाने में अद्भुत कला का प्रदर्शन किया है। रायकृष्ण दास के अनुसार --"इस गुफा में सभी चित्र एक से बढ़कर एक हैं। गुफा संख्या दो की रंग योजना के संबंध में श्री वी.जी.गोखले ने लिखा है कि "नीले, हरे, बैंगनी और लाल रंग इतने सराहनीय ढ़ंग से घुलमिल गए है कि उनसे चित्र रचना में रस और भाव का अनुपम सामंजस्य उत्पन्न हो गया है। जैसा कि अजंता कि गुफाओं में बुद्ध की जन्म जन्मांतर की कथाओं का चित्रण है वाचस्पति गैरोला ने यहां बने चित्रों के विषयों को तीन भागों में बांटा है - अलंकारिक, रुप -भैदिक एवं जातक कथाएं।

निष्कर्ष- अतः इसमें कोई संदेह नहीं कि अजंता की चित्र शैली भारतीय चित्रकला का आदर्श है। यहाँ के कलाकारों ने प्रकृति को जहा अलंकारिक रूप में दर्शाया है, वही भाव प्रदर्शन की दृष्टि से कलाकारों ने अपनी छंदमय बुद्धि और कल्पना का परिचय देते हुए इसके पात्रो की जगह ,पात्रों का स्वभाव चित्रित कर अजंता के मूक चित्रों का संसार सजीव कर दिया।

1

2

3

चित्र सूचि:

1- मरणासन्न राजकुमारी 2- पद्मपाणि अवलोकितेश्वर 3- राहुल समर्पण

REFERENCES

[1] प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति पृष्ठ सं -173

[2] प्राचीन भारत- पृष्ठ सं -102

[3] डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला का इतिहास